पारिस्थितिकीय संकट की उपस्थिति दर्ज करते हिंदी उपन्यास

-प्रियंका प्रियदर्शिनी

"Nature has introduced great variety into the landscape, but man has displayed a passion for simplifying it. Thus he undoes the built-in checks and balances by which nature holds the species within bounds. One important check is a limit on the amount of suitable habitat for each species."1

-Rachel Carson

सारांश:

साहित्य सर्वदा अपने समय और समाज को गहनता के साथ ग्रहण करता है तथा साहित्यकार की कल्पना, उसका ज्ञान, उसकी वैचारिक प्रतिबद्धत्ता और संवेदनात्मकता एक अंतर्दृष्टि का निर्माण करती है जो उसे युगीन समस्याओं से जोड़ती है। मौजूदा दौर की सबसे बड़ी समस्या के रूप में प्रकृति और मनुष्य के बीच गहराता पारिस्थितिकीय संकट एक चिंतनीय मुद्दे के रूप में समूचे विश्व के समक्ष आ खड़ा हुआ है। यही कारण है कि मौजूदा दौर के साहित्य लेखन की दृष्टि और मुद्दे भी बदले हैं। लंबे समय तक हिन्दी साहित्य ने प्रकृति की विराटता, उसके सौन्दर्य, रहस्य और स्वरुप का आनंद लेते हुए उसे अपने साहित्य का विषय बनाया किन्तु पिछले दो-तीन दशकों में प्रकृति को देखने का नजरिया साहित्यकारों ने बदला है।

साहित्यकार सहज ही सूक्ष्म द्रष्टा होते हैं; वे इन प्रतिकूलताओं को जल्दी ही भांप लेते हैं और अपनी सृजनात्मकता के जरिए उसका प्रतिरोध जाहिर करते हैं। समकालीन साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह प्रतिरोध है यानि की रचनाकार की जागरूकता है। प्रकृति और मनुष्य को लेकर इस जागरूकता का परिणाम है समकालीन हिन्दी साहित्य की पारिस्थितिकी। आलेख में पारिस्थितिकी की संकल्पना को समझेंगे और हिंदी उपन्यासों में उसकी उपस्थिति को दर्ज करेंगे।

पूँजीवादी मानसिकता ने प्रकृति और मनुष्य के बीच जो द्वन्द्व पैदा किया है वह सूक्ष्म किन्तु भयानक संभावनाओं से भरा है। आलेख में शामिल उपन्यास 'रह गयीं दिशाएं इसी पार' यह बताता है कि प्रकृति के नियमों के विरुद्ध संसाधनों के अपव्यवय को विज्ञान की उपलब्धि मानना मनुष्य को गंभीर संकट की ओर उन्मुख करने वाला है। हमें अपने जीने के तरीकों में बदलाव करना होगा, सुविधाओं की ओर भागने से पहले ठहर कर सोचना होगा। विज्ञान द्वारा संभव जो भी हमारे इर्द-गिर्द है अथवा आने वाला है उसके पीछे एक संवेदनशील और सतर्क दृष्टिकोण की आवश्यकता है। आलेख में जिस दूसरे उपन्यास 'ताकि बची रहे हरियाली' पर बात की जाएगी वह भारतीय कृषि संस्कृति में विज्ञान और पूंजी के हस्तक्षेप के बाद की कहानी बयां करती है।

बीज शब्द: पारिस्थितिकी, जैविक घटक, भौतिक घटक, पूंजीवाद, बाजारवाद, जैव-विविधता, क्लोनिंग, रासायनिक खाद, कीटनाशक, वर्मी कम्पोस्ट, बहुराष्ट्रीय कंपनी

पारिस्थितिकी:

प्रसिद्द विद्वान इरफ़ान हबीब लिखते हैं, "पारिस्थितिकी वस्तुतः पर्यावरण के साथ हमारे संबंधों के अध्ययन का विज्ञान है।"2

पारिस्थितिकी, विज्ञान की वह शाखा जिसके भीतर हम पर्यावरण के जैविक तथा भौतिक इकाइयों के परस्पर संबंधों का अध्ययन करते हैं। पारिस्थितिकी का सीधा संबंध जीवों के अन्य प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भरता, उनके वासस्थान और उसमें उनके जीवन की स्थिति से है अर्थात जब हम पारिस्थितिकी की चर्चा करते हैं तब हम वास्तव में जीवित प्राणियों के बीच आपसी संबंधों तथा भौतिक पर्यावरण पर उसकी निर्भरता के साथ ही उनके वासस्थान यथा जल, जंगल, जमीन, वायु, पर्वतों, पहाड़ों, पठारों और ध्रुवों पर उनके जीवन और अस्तित्व के विषय में बात कर रहे होते हैं।

आज मानवीय क्रियाकलापों तथा उनकी अनियंत्रित आकांक्षाओं के कारण जीवों के वासस्थान दूषित हो चुके हैं। मनुष्य यह भूल चुका है कि वायु, जल, मृदा, पर्वत, पहाड़, जंगल आदि में भी जीवों का वास है और ये वासस्थान प्रकृति ने बिना किसी भेदभाव के सबसे लिए उपलब्ध कराया है। पारिस्थितिकी की

संकल्पना के तहत जिस साहचर्य, समभाव और पारस्परिक निर्भरता की बात कही गयी थी, आज वह खतरे में है। मनुष्यों का एक खास वर्ग प्रकृति के अन्य तत्त्वों का स्वामी बन बैठा है और अपने अनुसार उन तत्त्वों से खेल रहा है। यही कारण है कि पारिस्थितिकी, विमर्श के घेरे में आ खड़ा हुआ है।

भारत में हुए सबसे चर्चित पर्यावरण आन्दोलन 'चिपको आन्दोलन' का एक विश्वविख्यात नारा हुआ कि, "इकालाजी ही स्थायी अर्थव्यवस्था है।"3 यह केवल नारा नहीं था, यह किसी दूरदर्शी की चेतावनी थी। न चेतने का अंजाम विश्वभर के समक्ष कितनी बड़ी चुनौती बनकर उभरा है यह वर्तमान विश्व में पर्यावरण संबंधी पहलकदमियों और वार्ताओं के द्वारा लिए जा रहे निर्णयों से पता चलता है। चिपको आन्दोलन के पचास-इक्यावन वर्ष बाद भी पर्यावरण और पारिस्थितिकी की समस्या ग्लोबल प्रॉब्लम के रूप में वाजिब हल मिलने की प्रतीक्षा में है।

पारिस्थितिकीय संकट की उपस्थिति दर्ज करते हिंदी उपन्यास:

पारिस्थितिकीय संकट से आशय पृथ्वी पर मौजूद जीवों और भौतिक घटकों के अस्थिर संबंधों से है। वर्तमान जगत में मनुष्य और प्रकृति के संबंधों की स्थिति नाजुक मोड़ पर है। मनुष्य और प्रकृति के संबंधों को दो शब्दों यथा अलगाव और दुराव द्वारा परिभाषित किया जा सकता है। हिंदी साहित्य लेखकों ने इस अलगाव को महसूस करते हुए इसे अपने साहित्य का विषय बनाया है। हिंदी के ऐसे ही दो उपन्यासों को हम देखेंगे जो वैज्ञानिक विकास की सीढियों पर गंदे जूतों के छाप लांघकर आगे बढ़ जाने के खतरों से आगाह करते हैं।

'रह गयीं दिशाएं इसी पार' तथा 'ताकि बची रहे हरियाली' के विशेष सन्दर्भ में

प्रसिद्द विद्वान व आलोचक राजेंद्र यादव ने लिखा है "वैज्ञानिक शोध के परिवेश में लिखा गया यह उपन्यास हिन्दी में तो विलक्षण है ही, मुझे नहीं लगता किसी और भारतीय भाषा में भी ऐसी कोई रचना है। हां, इसके आस्वाद के लिए विज्ञान की प्राथमिक जानकारी से भी ज्यादा वैज्ञानिक दृष्टि की जरूरत है। कहना अनावश्यक है कि आधुनिकता का सूत्रपात जिस रैशनेलिटी (यानि तार्किक मानसिकता) से हुआ है उसके पीछे विज्ञान के आविष्कार और यही वैज्ञानिक दृष्टि रही है।" आगे राजेंद्र यादव लिखते हैं, "कहने का मन तो यही करता है कि भारतीय पाठक के लिए यह पच्चीस-पचास साल पहले संभव कर दी गई रचना है और निश्चय ही विचलित करने वाली कृति है-शायद आसानी से पचाई भी नहीं जा सकेगी।"4

आलोचक रोहिणी अग्रवाल लिखती हैं, "संजीव गंभीर शोधार्थी हैं और घोर यथार्थवादी भी। वे सौंदर्यान्वेषी रोमांटिक कवि भी हैं और आदर्श की स्थापना के लिए मनुष्य और प्रकृति के बीच अंतःसूत्रों की तलाश और व्याख्या करने वाले दार्शनिक भी।"5

वरिष्ठ साहित्यकार संजीव के वैज्ञानिक शोध और वर्षों के परिश्रम का लिखित साक्ष्य है उपन्यास 'रह गयीं दिशाएँ इसी पार'। यह उपन्यास परिपक्व लेखन के साथ लेखक के दूरदर्शी होने का प्रमाण है, ऐसा वही लेखक कर सकता है जो अपने वर्तमान का प्रतिबद्ध निरीक्षक हो जिसे भविष्य की चिंता सालती हो और जो अपनी उपस्थिति से अपने हिस्से का सच बोलना जानता हो।

समस्यामूलक यह उपन्यास बहुआयामी है। उपन्यास में पूँजीवाद और विज्ञान के गठजोड़ से पर्यावरण, पारिस्थितिकी और समाज को होने वाले नुकसान की ओर पाठक का ध्यानाकर्षण किया गया है। साथ ही यह चित्रित किया है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास यदि पूंजीपतियों द्वारा संचालित और नियंत्रित होता है तो विकास का पर्यावरणीय पक्ष क्या होगा और उसकी कीमत कौन चुकाएगा? उपन्यास में लेखक ने अन्य समस्याओं जैसे 'अध्यात्म के बाजारीकरण', 'मछुआरों के आर्थिक शोषण', 'मनुष्य व पशु माँस के व्यापार', 'परित्यक्त अथवा अनाथ स्त्रियों की स्थिति' तथा उनके श्रम से जुड़े सवालों को उठाया है। विज्ञान के विकास से उपोत्पाद में उपजी सांस्कृतिक प्रदूषण का सामाजिक संस्थाओं और मूल्यों में हस्तक्षेप आदि को लेखक ने परत दर परत उघाड़ा है। जीवन-मरण के प्रश्न को दार्शनिकों के साथ-साथ साहित्यकारों ने भी लगभग दर्शन की वस्तुरूप में स्वीकृति दे दी थी, पहली बार संजीव ने जन्म, मृत्यु, जीवन, मरण, जेंडर, ईश्वर और अनंत को वैज्ञानिकता के चश्में से देखा है। न सिर्फ़ देखा है बल्कि उनके मूल को जैव-वैज्ञानिक स्तर पर देखने-समझने की तार्किक दृष्टि प्रस्तुत की है जिसका आधार विज्ञान और केंद्र समाज है। कुल मिलाकर कहें तो कह सकते हैं कि उपन्यास का कलेवर पारिस्थतिकीय चिंतन के आलोक में लिखा गया है।

विस्नू बिजारिया इस उपन्यास का पहला केन्द्रीय पात्र है, दूसरा है उसका बेटा जिम और तीसरा उसका भाई किस्नू। **विस्नू** एक बडा बिज़नेसमैन (पूंजीपति) है जिसका व्यवसाय देश-विदेश में फैला हुआ है। 'उसका फिश एंड फ्लेश का बिजनेस है।'6 विदेश(न्यू फाउंडलैंड) जाकर वह मांस-मछली के व्यवसाय के सारे गुण सीख आया था जिसे भारत में लागू कर अकूत धन कमा रहा था। उसने भारत के समुद्री तटों पर अपने ट्रालरों के जाल बिछा रखे थे। "जगह-जगह इनके

ट्रालर चलते हैं कुछ केरल, कुछ चेन्नई, कुछ विशाखापट्नम, कुछ चिल्का में, कुछ यहाँ। ट्रालरों के चलते स्थानीय मछुआरों से कभी-कभी ठन भी जाती है-इसी तरह मांस उद्योग (पीगरी) भी फल-फूल रहा है पर सब गुप-चुप तरीके से...बस।"7 **विस्नू बिजारिया अजर होना चाहता है।** इस लक्ष्य की सार्थकता के लिए वह एक प्रयोगशाला खोलता है। वहाँ पशु-पक्षी से लेकर मनुष्य तक प्रयोग के लिए उपलब्ध है। प्रयोगशाला में प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों को नियुक्त करता है। एजिंग की समस्या से निजात पाने की होड़ विश्व भर के वैज्ञानिकों के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य है किन्तु उन्हें यह करना है, उन्हें नहीं भी करना तो 'पूँजीपतियों' को उनसे यह कार्य करवाना है। इस कार्य के लिए विस्नू बिजारिया ने अपने पड़ोसी प्रोफेसर सत्यप्रकाश के लड़के विशाल को चुना था जो अमेरिका के एक बड़े कंपनी 'गैलक्सी' में युवा वैज्ञानिक है। हाल ही में विशाल के एजिंग और ह्यूमन क्लोनिंग पर दो पर्चे छपे थे। पर्चे छपने के बाद से ही उसे लगातार अन्य बड़ी-बड़ी कंपनियों के फोन, ईमेल, और ऑफर आ रहे थे। विशाल को ऐसे-ऐसे लुभावने ऑफर दिए गए कि एक समय के लिए वह डर गया और अनायास ही उसके मुंह से निकला **"ये पैसे वाले ज्ञान-विज्ञान की सारी बौद्धिक संपदा को हथिया लेना चाहते हैं- अबतक सुनता ही आया अब प्रत्यक्ष हो गया।... ।"'8** ऐसा उसके मुंह से इसलिए निकला था क्योंकि उसके द्वारा प्रयोग के लिए इंसानों की मांग की गई थी और कंपनी से आए लोगों ने उसे तुरंत उत्तर दिया था कि "कितने चाहिए?"

विशाल किसी कंपनी को हाँ कहता इससे पहले ही विस्नु बिजारिया उसके पास पहुँच गए और उन्होंने विशाल को अपनी चिंता बताई, उन्होंने कहा **"मेरी प्रॉब्लेम अमर होने की नहीं, अजर होने की है।"9** विशाल को इस काम के लिए विस्नु बिजारिया ने ब्लैंक चेक दिया और सिर्फ अपने लिए कार्य करने के लिए मना लिया था। विशाल बिजारिया के कलकत्ता वाले प्रयोगशाला का डायरेक्टर बना दिया गया अब उसे वहीं सारे रिसर्च और प्रयोग करने थे। विशाल कलकत्ता आ गया और वायदे के मुताबिक बिना रहस्योद्घाटन के वह बिजारिया को अजर बनाए जाने हेतु किये जाने वाले प्रयोगों में जुट गया।

विस्नू बिजारिया के **''गिरधारी लाल अनाथालय' के पास ही 'अस्तित्व' नामक अनुसंधान केंद्र शोध के लिए तैयार खड़ा था।' "अस्तित्व कब अनाथालय के अस्तित्व को सोख लेगा कोई नहीं जानता।"10** बिजारिया के अजर होने का उपाय विज्ञान की जिस उपलब्धि के पास था उसे **'क्लोनिंग'** कहा जाता है। बिजारिया को जवान बनाए रखने के लिए स्टेम सेल्स के जरिए क्लोन अंग यानि हु-ब-हु नए अंग बनाकर पुराने शरीर में ट्रांसप्लांट किया जाना था। इस प्रयोग में अरबों रुपये खर्च होने थे और सफलता की कोई गारंटी नहीं थी। प्रयोग के लिए बिजारिया ने विकसित प्रयोगशाला के साथ-साथ सभी प्रकार के उपकरण, रसायन, तरह-तरह के पशु, जीव व मनुष्य उपलब्ध कर रखे थे। वैज्ञानिकों के साथ ही टेक्निशन, कंप्युटर ओपेरेटर आदि की पूरी व्यवस्था की जाती है। 'इतनी व्यवस्था देखकर विशाल चौंका उसके समझ में नहीं आ रहा था कि ये अरबों के उपकरण कहाँ से आए? इतने उपकरण तो उसके लंदन के गैलक्सी में भी नहीं थे जहां दो-दो नोबेल पुरस्कार विजेता काम कर चुके हैं। विशाल के दिमाग में एकबार के लिए आता है कि **"यह अपराधियों का कोई अंतर्राष्ट्रीय गिरोह तो नहीं?"**11 खैर उसने ये सब स्वीकार लिया था सो अब उसे बिजारिया के लिए काम करना ही था। वह इस काम में अकेले नहीं था। देश-विदेश के बड़े से बड़े विद्वान उसके काम में उसके सहयोगी थे। जिम और डॉ अजय तो थे ही, डॉ जिया, डॉ बलविंदर आदि भी। डॉ बलविंदर की नियुक्ति बिजारिया के जवान बने रहने के लिए हो रहे शोधों व प्रयोगों के लिए हुई थी किन्तु उन्होंने पाया कि उनका नौकर जिसे वे 'घरघुसरा' कहते थे 'वह एक नंबर का डरपोक था। समुद्र की लहरों से उसे खासा डर लगता था, जिस कारण बच्चे उसे तंग करते थे और वो भागकर घर में आ छिपता था। इस बात से परेशान डॉ बलविंदर ने 'घरघुसरे' को अपनी प्रयोगभूमि बनाया और उन्होंने उसके भीतर के डर वाले जीन्स को पैसिव कर दिया। अगली बार जब घरघुसरा बहार निकला और बच्चों ने उसे चिढाया तब वह भागने की जगह समुद्र में आगे बढ़ता गया और डूबकर मर गया।'12 घरघुसरे के लिए विज्ञान वरदान नहीं अभिशाप साबित हुआ और डॉ. बलविन्दर ईश्वर के दूसरे रूप की जगह यमराज के रूप में स्थापित हुए।

'एलिस ओशन फूड्स' बिजारिया के कारोबारों में से एक था। इसके सहारे उसने मत्स्य व्यापार में एक तरह से समुद्र पर कब्ज़ा कर लिया था जिससे छोटे मछुआरे परेशान थे। मछुआरे अपनी इच्छाशक्ति और एक साहसी मछुआरिन बेला के सहारे लड़ते हैं। बेला कहती है, **"समुद्र बचाओ। समुद्र बचेगा तो मछलियाँ बचेंगी, मछलियाँ बचेंगी तो मछुआरे बचेंगे।"13**

लड़ाई ट्रालर बनाम छोटी नौका की थी। मत्स्य उद्योगपति बनाम छोटे मछुआरे की तथा बड़ी मछली बनाम छोटी मछली की हो चली थी। बेला घूम-घूमकर मछुआरों को संगठित कर रही थी। वह उन्हें समझा रही थी **"जिस तरह पूरे देश के जंगल, पहाड़ नदी और जमीन और संपदा को छीनकर बेचा जा रहा है, उसी तरह हमारे आठ हजार किलोमीटर सागर तट के अधिकारों को हमसे छीनकर बड़ी कंपनियों को बेच दिया जाएगा।"14**

मछेरे विस्नू बिजारिया के ताबूत के कील साबित होते हैं। पुलिस लाल कुठि पहुँचती है और एलिस को गिरफ्तार करती है। एलिस को पहली बार पति के काले-कारनामों की जानकारी मिलती है। वह ठगी सी रह जाती है। विस्नू बिजारिया अपने सारे गलत धंधे एलिस के नाम से चलाता था। इस घटना के बाद वह गायब हो जाता है, सात दिनों बाद भी न उसका फोन लगता है न किसी को उसकी उसकी थाह लगती है। लोगों का मानना है कि दुनिया के किसी कोने में वैज्ञानिक प्रयोगों का फल पाता हुआ शायद वह मर गया है, कैसे मरता है? मरता है भी या नहीं? अभी भी कहीं उसपर शोध चल रहा आदि बातें वैज्ञानिकों के सर्कल में घूमती हैं।

टेस्ट ट्यूब बेबी जिम की वैज्ञानिक रुचि और शोधों का सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष:

विज्ञान द्वारा असंभव कार्यों के संभव कर दिए जाने के कारण ही शायद विस्नू बिजरिया का विज्ञान और वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में विशेष रूचि थी। यह रूचि बेटे अतुल बिजारिया उर्फ़ जिम के जन्म के बाद प्रगाढ़ होती चली गयी। जिम एक ऐसा लड़का है जो अपनी नानी कैथरीन के गर्भ में पला-बढ़ा और जिसे उसकी नानी ने ही जन्म दिया किंतु वो अपने पिता विस्नू बिजारिया (भारतीय मूल) और माता एलिस (अमेरिकी मूल) की संतान है। यह विज्ञान से संभव हुई घटना है जिसे विज्ञान की भाषा में 'टेस्ट ट्यूब बेबी' कहते हैं। जिम की माँ एलिस के गर्भधारण करने में असमर्थ पाए जाने पर जिम की उत्पत्ति एक टेस्ट ट्यूब बेबी के रूप में कराई गई और उसको पोषित होने के लिए नानी का गर्भ मिला।

जिम एक बीस वर्षीय आत्मकेंद्रित शोधी, जिज्ञासु और दार्शनिक प्रकृति का युवक है। उसके दर्शन में सामाजिक नियमों, विचारों और भावनाओं के लिए जगह नहीं है; वह हर क्रिया, प्रक्रिया और घटना को विज्ञान के चश्में से देखता है और उसी के अनुरूप व्यवहार करता है। अस्वाभाविक जन्म प्रक्रिया के कारण जिम के चरित्र में भी एक विशेष प्रकार का अजनबीपन है। उसे जन्म के प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध अपनी प्रयोगशाला में ही गर्भधारण और प्रजनन संबंधी सारे रहस्यों को उजागर कर लेना है। 'वह जॉन नर्सिंग होम में हुए एबॉर्शन के मांसपिंड को फोर्मलिन भरे जार में बंद करके अपने म्यूज़ियम में पहुँचाने की आज्ञा देता है। **इस मांसपिंड को वह 'बाल भोग' की संज्ञा देता है** और अपने साथी अजय से घंटों मनुष्य व शिशु मांस सेवन पर वार्तालाप करता है।'15

उपन्यास में 'लारा' नामक एक स्त्री पात्र है। लारा जिम की दोस्त है इस कारण वह जिम के अन्य दोस्तों के भी संपर्क में आती है। जिम और उसके वैज्ञानिक मित्र लारा को विज्ञान से संभव हो सकने वाली घटनाओं के विषय में बताते हैं। लारा के पिता एक ईमानदार प्रकृति के सरल पुरुष हैं जिन्होंने बेमानी से जीवन में कुछ भी नहीं पाया न पाना चाहते हैं। उनका यह सरल स्वभाव न उनकी पत्नी को रास आता न ही पुत्रों को। लारा अपने पिता को चाहती थी। उसे माँ और भाई द्वारा पिता की अवहेलना बुरी लगती थी किन्तु वह कुछ कर नहीं सकती थी। जिम लारा को बताता है कि वह पिता के क्लोन को जन्म दे सकती है वह उसे ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित भी करता है। लारा को जैसे ही यह पता चलता है कि **क्लोनिंग के जरिए वह अपने पिता को जीवित रख सकती है अर्थात वह उनके गुणों को सुरक्षित कर सकती है, वह अपने गर्भ में पिता का क्लोन पालने की बात करती है।** इसपर जिम के मित्रों के तरफ से जवाब आता है **"माने, पहले बाप ने पैदा किया बेटी को अब बेटी पैदा करेगी बाप को?"16**

लारा का भाई चंदन पर्यावरण संरक्षक की नौकरी करता है और प्रायः जीवों की घटती संख्या और उनके लुप्त होने की चिंता करता रहता है लेकिन जैसे ही उसे लारा द्वारा पिता के क्लोन को जन्म देने की बात पता चलती है वह आग-बबूला हो उठता है। वह लारा को समझाने की कोशिश करता है और कहता है **"तुम समझती क्यों नहीं कि तुम्हारा यह कदम घोर अनैतिक और अधार्मिक है।"17** लारा के अपने फैसले पर अडिग रहने की अंतिम परिणति यह होती है कि माँ और भाइयों द्वारा गला दबाकर उसकी हत्या कर दी जाती है। अगले दिन जिम को चारों ओर से धिक्कार मिलता है, **"मरवा दिया बेचारी को।"18**

एक बार की घटना है कि ट्रालर पर पीने के पानी में किसी के द्वारा मछली डाल दी गयी। मछली के मल से पानी दूषित हो गया, उस दूषित पानी को पीने के बाद भी समस्या होती और न पीने पर भी जान को खतरा होता। इस समस्या के निदान के रूप में जिम ने यह सुझाव दिया कि उस दूषित जल को फेंका न जाये बल्कि किसी ट्यूब के जरिये एनिमा बनाकर थोडा-थोडा रेक्टम में लेते रहा जाये। विस्नु बिजारिया को जब यह बात पता लगती है तब वह जिम पर क्रोधित होता है। बिजारिया गुस्से में कहता है, "तुम हर चीज को मजाक समझते हो? मुंह मुंह है और रेक्टम, रेक्टम! इसपर जिम जवाब देता है, "होगा बट मर जाने पर दोनों धरे के धरे रह जायेंगे।"19 हालाँकि जिम के इस उपाय के बिना भी लोग बच जाते हैं।

शहनवाज एक ऐसा ही पात्र है जिसे जिम अपने एक्सपेरिमेंट के लिए उपयोग करता है। यह हॉर्मोन ट्रांसप्लांट के जरिए वह उसका सेक्स चेंज कराता है। शहनवाज जिम से पूछता है, "आप मेरा इतना लम्बा खर्च क्यों उठा रहे हो? क्या इंटरेस्ट है आपका? जिम थोड़ी देर तक चुपचाप ड्राइव करता रहा, फिर बोला, "मैं खुद नहीं जानता, इनफैक्ट यह तुम्हारी मर्जी से तुम पर चल रहा एक एक्सपेरिमेंट है।"20 शहनवाज की प्राकृतिक समस्या को वह विज्ञान के सहारे सुलझाना चाहता है और सुलझाता भी है। किन्तु सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत शहनवाज को शहनाज के रूप में स्वीकारता ही नहीं। वह अपने कार्यस्थल पर एक विचित्र वस्तु अथवा प्राणी के रूप में चर्चा का विषय बना रहता है। बॉस उसे काम से निकाल देता है,अन्य कहीं उसे काम नहीं मिलता। उसका पार्टनर भी उससे ठीक से पेश नहीं आता और अंत में उसे एक सेक्स वर्कर के रूप में जिस्म बेचने को कह देता है। माँ-पिता और परिवार पहले ही सामाजिक आलोचना के डर से स्थान बदल देते हैं। कुल मिलाकर जिम ने जिसे सोल्यूशन माना था वह शहनवाज के लिए इशू बन गया। **शहनवाज/शहनाज अब लाचार और अकेला/ अकेली था/थी।**

आध्यात्म का बाजारीकरण:

विस्नु बिजारिया के भाई **किस्नू बिजारिया ने अध्यात्म के बाजार में हाथ आजमाया था** और गौ-रक्षक बनकर गायों की आड़ में स्वयं को किस्नू बिजारिया से कृष्ण के अवतार कृष्णानंद के रूप में स्थापित कर लिया था। कृष्ण के नाम से धनी-मानी भक्तों की भीड़ जुटने लगी। चढ़ावे में सोने-चांदी की अंगूठियाँ, चेन, हार और नकद सब चढ़ाए जाने लगे। राजस्थान के शेखावटी के मुख्य आश्रम की शाखाएं देशभर में खुलने लगीं। विदेशों में भी वे छा गए। अपने आध्यात्म के बाजार से किस्नू बिजारिया ने अथाह धन अर्जित किया। बड़ी-बड़ी कंपनियां उनके कार्यक्रमों को स्पॉन्सर् करती थी। कार्यक्रम में भाग लेने हेतु पचास-पचास हजार का शुल्क स्त्री-पुरुष भरते थे। एक बड़े कार्यक्रम के ठीक पहले अचानक कृष्णनन्द उर्फ भगवान समाधि में चले जाते हैं और फिर कभी लौटते नहीं। ऐसा माना जाता है कि हमेशा सेठानियों, गोपियों और सुविधाओं से घिरे रहने के कारण, एक लाइन में कहे तो अतिशय भोग-विलास के कारण उन्हें तरह-तरह की बीमारियाँ हुई और वे उससे उबर नहीं पाएं और गोलोक वासी हो गए। उनके मरने के बाद उनके द्वारा जमा की गई अकूत संपत्ति पुलिस के हाथ थी, किस्नू बिजारिया के अमर होने की कहानी इस तरह अपने अंत तक पहुँचती है।

करनी देवी के दोनों बेटे प्राकृतिक पारिस्थितिकी से छेड़छाड़ करने के नतीजे भुगत चुके थे। "लाश से अपचय की बू आने लगी तो बदबू छिपाने के लिए एक ने पारंपरिक खुशबू चन्दन का सहारा लिया, तो दूसरे ने डीप फ्रीज या अन्य वैज्ञानिक तरीकों का। पारंपरिक को परंपरा ने संभाला, वैज्ञानिक को विज्ञान ने।"21

ताकि बची रहे हरियाली

वरिष्ठ कथाकार अनंत कुमार सिंह का यह उपन्यास 'ताकि बची रहे हरियाली' कृषि पारिस्थितिकी के भीतर की जा रही हिंसात्मक कार्यवाइयों को उजागर करती है। उपन्यास की शुरुआत एक ईमानदार, उत्साही और पारंपरिक कृषि पद्धति में विश्वास रखकर रासायनिक खादों और कीटनाशकों के विकल्प तलाशने वाले युवा कृषि वैज्ञानिक नवीन के सरकारी पदस्थापना से होती है। नवीन रासायनिक खादों और कीटनाशक दवाओं की आड़ में अरबों रुपये के व्यवसाय की सच्चाई से वाकिफ था सो उसका उद्देश्य फसलों और इंसानों को बचाना था। नवीन इन रासायनिक खादों और कीटनाशक दवाओं के विकल्प के रूप में पारंपरिक तरह से कीटनाशक दवाएं और वर्मी कम्पोस्ट तैयार करता था। **"वर्मी कम्पोस्ट एवं कीटनाशक दवाएं उन छोटे किसानों को मुफ्त में देता था जो बहुत गरीब थे और जो भूमिहीन होने के चलते बटाई पर खेती करते थे। आस-पास के किसानों को वह बुलाता और खाद तथा कीटनाशक दवाएं बनाने की तकनीक से वाकिफ कराता।"22**

पूंजी की सत्ता बाकी सत्ताओं की संचालक होती है सो उसके आगे धर्म और राजसत्ता भी नतमस्तक होती है। अपने कार्य को पूरी ईमानदारी से करना और उससे अपने समाज तथा लोक को लाभान्वित करना ही देशभक्ति है। नवीन एक समर्पित देशभक्त था, वह अपने ज्ञान का उपयोग लोकहित में कर रहा था। चूंकि लोक का विस्थापन ही आधुनिकता और सत्ता-शक्ति की पहली शर्त होती है इसलिए लोक हित में सोचने और करने वाले को पहले तो डराया-धमकाया जाता है फिर उसे ही लोक विरोधी साबित करने की कोशिश की जाती है। नवीन भी इस प्रक्रिया से अछूता नहीं रह सकता था। उसे भी अपनी ईमानदार कोशिशों के लिए डराया गया। "बजाप्ता एक पत्र आया है। पत्र में यही तो लिखा है- अगर अपनी आदत से बाज नहीं आए, मेरे रस्ते का रोड़ा बने रहे तो तुम्हारे बच्चों को उठा लिया जायेगा, पत्नी को नंगा घुमाया जायेगा और तुम्हारी बोटी-बोटी काटकर चील कौवों को दे दी जाएगी।"23

नवीन ने अपने साथियों के साथ मिलकर युद्ध स्तर पर वर्मी कम्पोस्ट बनाने का गुर किसानों को सिखाना शुरू कर दिया था। अपने अहाते से शुरू करके वह गाँव-गाँव जाकर यह काम करने लगा था। उसकी सफलता यह थी कि किसानों को विकल्पों की जानकारी हो रही थी और वे आर्थिक, मानसिक और शारीरिक लूट को समझने लगे थे। नवीन को पता था कि, "मल्टीनेशनल कंपनियां एक तो सीधे जहर पड़ोस रही थीं, दूसरी तरफ ऊँची कीमत भी किसानों से ऐंठ रही थी। फिर भी किसान इसे खरीदने को बाध्य थे, क्योंकि कीटों की दुश्मन है वो दवाएं। लेकिन आदमी, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे की भी वे दुश्मन हैं- किसानों को पूरी तरह इसकी जानकारी नहीं थी। साथ ही इसका विकल्प भी पता नहीं था।"24

जिस जिले (आरा) में नवीन की पोस्टिंग थी वहां उसने साथियों की मदद से कीटनाशक दवाओं की बिक्री पर पचास प्रतिशत तक की कमी ला दी। "किसान महँगे कीटनाशक की जगह थोड़ी सी मेहनत करके मुफ्त में ही उससे अच्छी प्रभावकारी और गुणकारी दवा घर में ही तैयार कर ले रहे हैं, दूसरी तरफ दोषमुक्त अनाज पैदा हो रहा है। जलकुंभी, अकवन, नीम की पत्तियां या भट्ठा- ये सारी चीजें गाँव में दुर्लभ नहीं, इसके लिए मशक्कत नहीं करनी पड़ती किसानों को सहजता से ये चीजें उपलब्ध हो जाती हैं और वे उपयोगी दवा तैयार कर लेते हैं।"25

रासायनिक खादों के प्रयोग से मिट्टी का उपजाऊपन प्रभावित होता है। लम्बे समय तक इनके प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता चली जाती है और खेत ऊसर हो जाता है, ऐसे में किसान पलायन, विस्थापन अथवा आत्महत्या के प्रति अग्रसर होते हैं। नवीन को ऐसा ही एक गाँव मिलता है जो लगभग खाली हो गया है।" "मतलब

गाँव की आबादी कम होती जा रही है?" आदित्य ने पूछा। "हाँ सर। लगभग एक तिहाई आबादी रोजी रोटी के लिए बाहर शहरों में हैं। ढेर सारे लोग पहले से थे। वैसे यह गाँव एक उदाहरण माना जाता था खेती के लिए, लेकिन घाटे का सौदा साबित हुई खेती।"26

रासायनिक खादों के प्रयोग के विषय में पूछे जाने पर ग्रामीण बताता है, "आप सही कह रहे हैं सर। अगर अभी बिना रासायनिक खाद के फसल उपजायी जाये तो एक दाना भी नहीं होगा। अधिक उपज के लिए अधिक से अधिक खाद डाला जा रहा है। खेत की नमी गायब हो गयी है।"27

किसानों की लूट की आधी व्यवस्था पूंजीपति करते हैं और बाकी कसर पूरी करती हैं सरकारें। सामंतवाद हो या राजशाही कृषकों के या तो श्रम की लूट हुई है अथवा उनकी संपत्ति की। शासक वर्ग ने हमेशा किसानों को बरगलाया ही है। शायद इसीलिए जब एक गाँव में नवीन और उसकी टीम जाती है तब लोगों में से एक ने कहा, "किसान को आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश कर् रहे हैं आप, यह भी अच्छी बात है लेकिन जमीन उनकी रहेगी तब न किसान खेती करेंगे। सारी जमीनें तो बहुराष्ट्रीय कंपनियों को यहाँ की सरकार दहेज के रूप में दे रही है। अभी यह इलाका इससे बचा हुआ है, लेकिन सुन रहा हूँ कि जल्द ही ऐसा करने की योजना है।"28

नवीन अपने काम में लगा रहता है लेकिन अच्छा काम करना और अच्छा जीवन जीना व्यक्तिगत मसला नहीं होता। व्यक्ति का पर्यावरण बड़ी भूमिका अदा करता है। किसान और कुछ पदाधिकारी अंत तक नवीन के साथ रहते हैं जबकि दुश्मनों की एक पूरी फ़ौज उसके खिलाफ खड़ी हो जाती है। पूरा तंत्र मिलकर निहत्थे नवीन से लड़ रहा होता है। उपन्यास के अंत तक किसान और नवीन लड़ते हैं। तंत्र भी अपनी हिंसात्मक कार्यवाहियों की कोशिश जारी रखता है। इस उपन्यास के लेखक और हमारी सदी का आँखों देखा हाल है कि-

"एक मज़दूर ने

लोहा खोद कर निकाला।

एक मजदूर ने

उसे पिघलाया।

एक मज़दूर ने साँचे में

डाल लोहे को-

बंदूक की गोली बनाई।

गोली पे पहला हक़

मजदूरों का था-

हक़ मांगते

एक मज़दूर ने

वो गोली खाई।।" 29

हमें इस कविता को किसानों और आम इंसानों के हक़ में पढ़ना चाहिए जिन्हें रोज गोली की थोड़ी-थोड़ी डोज दी जा रही है। हमसे हमारे वक्त की गुजारिश होगी कि हमारी मौजूदगी में लूटी जा रही पारिस्थितिकी के डकैतों पर हमारी निगाह हो और यही होनी चाहिए हमारी चैन की नींद की पहली शर्त।

निष्कर्ष:

कक्षा ग्यारहवीं की भूगोल की एन.सी.आर.टी. की पुस्तक कहती है, "world is a system of interdependencies."30 मतलब विश्व एक ऐसा तंत्र है जो परस्पर निर्भरता से चलती है। परस्पर निर्भरता की समझ कैसे धुंधली पड़ती जा रही है, इसकी बानगी प्रस्तुत करते हैं उपयुक्त उपन्यास। वास्तविकता यह है कि विश्व को दैवीय और मानवीय सत्ताओं से इतर पूंजी की सत्ता संचालित कर रही है। वह सत्ता जिसकी पहली और आखिरी ख्वाहिश किसी भी कीमत पर पूंजी

निर्माण है। जिसके आगे राजसत्ता नतमस्तक है और धर्म सत्ता भी अपना रास्ता बदल लेती है। प्रकृति की सर्वोच्च सत्ता को अस्वीकृत करते हुए कागज़ी दावों से जबतक पर्यावरण और पारिस्थितिकी बचाने की आभासी कोशिश होती रहेगी, दुनिया उतनी ही बचेगी जितनी चाय के कप में बची हुई चाय। हमें संसाधनों के अपव्यय की विसंगति समझनी होगी, हमें यह स्वीकारना होगा कि बढ़ी हुई क्रय क्षमता हमारा जीवनकाल नहीं बढ़ा सकती। दूसरों के हक़ की रोटी पेट भरे पेट में सिस्ट बनाती है उससे खून नहीं बनता। विस्नू बिजारिया संसाधनों के अथाह अपव्यय के बाद भी अजर नहीं होता न ही जिन्दा बचता है। उसका भाई किस्नू भी अपने ढोंग द्वारा जनता से लूटे गये धन को छोड़कर मर जाता है। उनकी करनी का दुःख उनके घर की स्त्रियाँ झेलती हैं। एलिस मर जाती है और दोनों बूढी महिलाएं जिन्दा रहकर भी जीवित नहीं रहतीं। जिम शुरू से भाव शून्य है। दूसरे उपन्यास में हम देखते हैं कि रासायनिक खादों के प्रयोग से मिट्टी बंजर हो रही है और लोग विस्थापित। प्रतिरोध के उत्तर में गोली-बंदूक चल रही। मारने के मीठे तरीके विफल होता देख, हाथ को हथियार पकड़ा दिया जाता है। दोनों ही स्थिति में जो संसाधन विहीन हैं वे मारे जा रहे हैं। वर्चस्व की सत्ता के रहते परस्पर निर्भरता का वैश्विक समीकरण हल होता नहीं दिखता।

सन्दर्भ:

1. Rachel Carson, Silent Spring(2000), Penguin classics, India, pg.-9
2. इरफ़ान हबीब, मनुष्य और पर्यावरण: भारत का पारिस्थितिक इतिहास (2016), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.-9
3. सुन्दरलाल बहुगुणा, धरती की पुकार (2019), राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ-18
4. संजीव, रह गईं दिशाएं इसी पार (2018), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ-10
5. रोहिणी अग्रवाल, समकालीन हिंदी उपन्यास और पारिस्थितिकीय संकट, हिंदी समय
6. संजीव, रह गईं दिशाएं इसी पार (2018), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ-64
7. संजीव, रह गईं दिशाएं इसी पार (2018), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ-66
8. वही, पृष्ठ-118
9. वही, पृष्ठ-121
10. वही, पृष्ठ-125
11. वही, पृष्ठ-126
12. वही, पृष्ठ-206
13. वही, पृष्ठ-195
14. वही, पृष्ठ-196
15. वही, पृष्ठ-55
16. वही, पृष्ठ-128
17. वही, पृष्ठ-138
18. वही, पृष्ठ-138
19. वही, पृष्ठ-164
20. वही, पृष्ठ-199
21. वही, पृष्ठ-288
22. अनंत कुमार सिंह, ताकि बची रहे हरियाली (2015), रीवर पब्लिशिंग हाउस, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ- 9
23. वही, पृष्ठ-12
24. वही, पृष्ठ-13
25. वही, पृष्ठ-13
26. वही, पृष्ठ-67
27. वही, पृष्ठ-67
28. वही, पृष्ठ-102

29. किताबगंज, फेसबुक, (15 दिसम्बर 2020)
30. NCERT, Geography, Class 11th, pg.-4

संपर्क-

प्रियंका प्रियदर्शिनी

शोधार्थी, हिंदी विभाग

हैदराबाद विश्वविद्यालय (तेलंगाना)